DR. SUMAN LAL RAY
Assistant professor
Deptt. of Sanskrit,
S.R.A.P. college, Bara chakia

B.A. (Hons.), part – II
Subject – Sanskrit
Paper – IV

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (द्वितीयोऽङ्कः)

श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद

श्लोक सं० – 5

मेदश्छेदकृशोदरं लघु भवत्युत्थानयोग्यं वपुः
सत्त्वानामपि लक्ष्यते विकृतिमच्चित्तं भयक्रोधयोः ।
उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले
मिथ्यैव व्यसनं वदन्ति मृगयामीदृग्विनोदः कुतः ॥

अन्वयः

वपुः मेदश्छेदकृशोदरं लघु उत्थानयोग्यं भवति भयक्रोधयोः सत्त्वानां विकृतिमच्चित्तमपि लक्ष्यते चले लक्ष्ये इषवः सिध्यन्ति यत् धन्विनां स च उत्कर्षः मृगया मिथ्यैव व्यसनं वदन्ति ईदृग्विनोदः कुतः ।

अनुवाद

शिकार करने से पेट की चर्बी कम हो जाती है और शरीर फुर्तीला एवं उत्साह सम्पन्न हो जाता है। भय तथा कोप में जंगली जीवों का मनोभाव मालूम पड़ता है। बाण चलानेवालों का विशेष गुण चल लक्ष्य पर बाण प्रहार सिद्ध हो जाता है। इसलिए शिकार को व्यसन मानना सर्वथा व्यर्थ है। मृगया जैसे मनोविनोद का साधन अन्यत्र कहीं नहीं है।

——— o ———

Scanned by TapScanner